UP Board Important Questions Class 9 इतिहास Chapter 5 आधुनिक विश्व में चरवाहे Itihas

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
घुमंतू किसे कहते हैं?
उत्तर:
घुमंतू ऐसे लोग होते हैं जो किसी एक जगह टिक कर नहीं रहते बल्कि रोटी-रोजी के जुगाड़ में एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं।

प्रश्न 2.
चरवाहे एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों घूमते रहते थे?
उत्तर:
चरवाहे जलवायु परिवर्तन के कारण तथा अच्छे चारे तथा रोजी-रोटी की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे।

प्रश्न 3.
गुज्जर गडरिये कैसे घरों में रहते हैं?
उत्तर:
गुज्जर गडरिये बुग्याल में मिलने वाले रिंगल (एक तरह का पहाड़ी बाँस) तथा घास से बने मंडपों में रहते हैं।

प्रश्न 4.
पहाड़ों में रहने वाले कोई दो चरवाहा समुदायों के नाम दीजिये।
उत्तर:
जम्मू-कश्मीर में गुज्जर बकरवाल, हिमाचल प्रदेश में गद्दी।

प्रश्न 5.
भाबर किसे कहते हैं?
अथवा
भाबर क्या है?
उत्तर:
गढ़वाल और कुमाऊँ के इलाके में पहाड़ियों के निचले हिस्से के आसपास पाये जाने वाले शुष्क या सूखे जंगल के इलाके को भाबर कहते हैं।

प्रश्न 6.
बुग्याल किसे कहते हैं?
उत्तर:
ऊँचे पहाड़ों में स्थित घास के मैदानों को बुग्याल कहते हैं।

प्रश्न 7.
कोंकणी किसानों से धंगर चरवाहा समुदाय किस प्रकार लाभान्वित होता है?
उत्तर:

- कोंकणी किसान धंगरों के मवेशियों के लिए चरागाह उपलब्ध कराते हैं।
- कोंकणी किसान धंगरों को चावल देते हैं।

प्रश्न 8.
पहाड़ी चरवाहों तथा पठारी चरवाहों की चक्रिक आवाजाही में क्या भिन्नता है?
उत्तर:
पहाड़ी चरवाहों की चक्रिक आवाजाही सर्दी-गर्मी से तय होती है, जबकि पठारी चरवाहों की चक्रिक आवाजाही बरसात और सूखे मौसम से तय होती है।

प्रश्न 9.
बंजारों के मुख्य इलाके बतलाइये।
उत्तर:
बंजारों के मुख्य इलाके उत्तरप्रदेश, पंजाब, मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र हैं।

प्रश्न 10.
'राइका' समुदाय कौनसा पशुधन पालता है?
उत्तर:
राइकाओं का एक वर्ग ऊँट पालता है, जबकि दूसरा वर्ग भेड़-बकरियाँ पालता है।

प्रश्न 11.
जैसलमेर इलाके के ऊँट पालकों तथा उनकी बस्ती को क्या कहा जाता है?
उत्तर:
जैसलमेर इलाके के ऊँट पालकों को मारु राइका तथा उनकी बस्ती को ढंडी कहा जाता है।

प्रश्न 12.
अंग्रेज इंग्लैण्ड के लोगों के लिए किन कृषि उत्पादों का उत्पादन बढ़ाना चाहते थे?
उत्तर:
अंग्रेज इंग्लैण्ड के लोगों के लिए जूट (पटसन), कपास, गेहूँ तथा अन्य खेतिहर वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाना चाहते थे।

प्रश्न 13.
औपनिवेशिक सरकार ने अपनी आय बढ़ाने हेतु किन वस्तुओं पर कर लगाया?
उत्तर:
औपनिवेशिक सरकार ने अपनी आय बढ़ाने हेतु जमीन, नहरों के पानी, नमक, खरीद-फरोख्त की चीजों तथा मवेशियों पर टैक्स लगाया।

प्रश्न 14.
औपनिवेशिक सरकार के नये कानूनों ने चरवाहों को किस प्रकार प्रभावित किया?
कोई दो बिन्दु दीजिये।

https://www.evidyarthi.in/

उत्तर:

- सीमित चरागाहों के उपयोग से उनका स्तर गिरने लगा तथा चारे की कमी होने लगी।
- चारे की कमी से जानवरों की सेहत तथा तादाद भी गिरने लगी।

प्रश्न 15.
चरवाहों ने अपने जीवन में आये बदलावों का सामना कैसे किया?
उत्तर:

- कुछ चरवाहों ने अपने पशुओं की संख्या कम कर दी।
- कुछ चरवाहों ने नये-नये चरागाह ढूँढ़ लिए।

प्रश्न 16.
अफ्रीका के कुछ चरवाहा समुदायों के नाम लिखिए।
अथवा
अफ्रीका के किन्हीं दो चरवाहा समुदायों के नाम लिखिये।
उत्तर:
बेदुईन्स, बरबेर्स, मासाई, सोमाली, बोरान तथा तुर्काना।

प्रश्न 17.
मासाई का अर्थ स्पष्ट कीजिये।
उत्तर:
मासाई शब्द का शाब्दिक अर्थ 'मेरे लोग' है।

प्रश्न 18.
मासाई चरवाहे कहाँ निवास करते हैं?
उत्तर:
मासाई मुख्य रूप से पूर्वी अफ्रीका के देश कीनिया एवं तंजानिया के अर्द्ध-शुष्क घास स्थलों में निवास करते हैं।

प्रश्न 19.
मासाई के चरागाहों को किस रूप में बदल दिया गया?
उत्तर:
मासाई के बहुत सारे चरागाहों को शिकारगाहों में बदल दिए गए, उदाहरणस्वरूप-कीनिया में मासाई मारा एवं साम्बरू नेशनल पार्क तथा तंजानिया में सेरेनगेटी पार्क।

प्रश्न 20.
उपनिवेश बनने से पहले मासाई समाज किन श्रेणियों में बँटा हुआ था?
उत्तर:
दो श्रेणियों में-(1) वरिष्ठ जन (ऐल्डर्स) (2) योद्धा (वॉरियर्स)।

प्रश्न 21.
वरिष्ठ जन का क्या कार्य था?
उत्तर:

वरिष्ठ जन शासन चलाते थे। समुदाय से जुड़े मामलों पर विचार-विमर्श करने तथा अहम फैसले लेने के लिए वे समय-समय पर सभा करते थे।

प्रश्न 22.
चरवाहों के घुमंतूपन के स्वभाव का क्या लाभ है?
उत्तर:
घुमंतूपन के स्वभाव के कारण चरवाहे बुरे वक्त का सामना कर पाते हैं तथा संकट से बच निकलते हैं।

प्रश्न 23.
कलांग कौन थे?
उत्तर:
जावा में कलांग लोग कुशल लकड़हारे और घुमन्तू लोग थे।

प्रश्न 24.
ढंडी क्या है?
उत्तर:
मारु राइकाओं का निवास ढंडी कहलाता है।

प्रश्न 25.
सेरेन्गेटी नेशनल पार्क कहाँ स्थित है?
उत्तर:
तंजानिया में।

प्रश्न 26.
तंजानिया के घास के मैदानों को क्या कहते हैं?
उत्तर:
स्तेपीज़।

प्रश्न 27.
औपनिवेशिक सरकार द्वारा 'अपराधी जनजाति अधिनियम' कब पारित किया गया?
उत्तर:
सन् 1871 में।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
भारत में पहाड़ी चरवाहे समुदायों के पहाड़ों में आवागमन का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
(i) भारत के प्रमुख पहाड़ी चरवाहे. समुदाय ये हैं-(1) जम्मू-कश्मीर के गुज्जर बकरवाल (2) हिमाचल प्रदेश के गद्दी (3) गढ़वाल-कुमाऊँ के गुज्जर तथा (4) हिमालय के पर्वतों में रहने वाले अन्य चरागाह समुदाय, जैसे-भोटिया, शेरपा, किन्नौरी आदि।

https://www.evidyarthi.in/

(ii) ये सभी पहाड़ी चरवाहे समुदाय मौसमी उतार-चढ़ाव का सामना करने के लिए सर्दी-गर्मी के हिसाब से अपनी जगह बदलते रहते हैं। जैसे-(1) गुज्जर बकरवाल और गद्दी समुदाय के लोग सर्दियों में जब ऊँची पहाड़ियाँ बर्फ से ढक जाती हैं तो ये शिवालिक की निचली पहाड़ियों में आकर अपने मवेशियों को झाड़ियों में चराते हुए सर्दी बिताते हैं और गर्मियों में उत्तर की तरफ जाकर वहाँ के चरागाहों में समय बिताते हैं। (2) इसी प्रकार गढ़वाल व कुमाऊँ के गुज्जर चरवाहे सर्दियों में भाबर तथा गर्मियों में बुग्याल की तरफ चले जाते हैं। (3) गर्मी एवं सर्दी के चरागाहों के मध्य बारी-बारी से आने-जाने की यह विशेषता भोटिया, शेरपा और किन्नौरी समुदायों सहित हिमालय के सभी चरवाहा समुदायों में पायी जाती है।

प्रश्न 2.
बंजारों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
बंजारे उत्तर प्रदेश, पंजाब, मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र के कई इलाकों में रहते थे। चरवाहों में बंजारा एक जाना पहचाना नाम है। ये लोग बहुत दूर-दूर तक चले जाते थे तथा रास्ते में अनाज और चारे के बदले गाँव वालों को खेती में काम आने वाले जानवर तथा दूसरी वस्तुएँ बेचते थे। ये अपने जानवरों के लिए हमेशा अच्छे चरागाहों की खोज में रहते थे।

प्रश्न 3.
चरागाहों की कमी से क्या समस्याएँ उत्पन्न हुईं?
उत्तर:

- चरागाहों की कमी से बचे-खुचे चरागाहों में चरने वाले जानवरों की संख्या बढ़ने लगी।
- पहले चरवाहे अपने मवेशियों को साथ लेकर इलाके बदलते रहते थे जिससे पिछले चरागाह पुनः हरे-भरे हो जाते थे किन्तु अब सीमित चरागाहों के बेहिसाब इस्तेमाल से उनकी गुणवत्ता गिरने लगी थी।
- चारे की कमी से जानवरों की सेहत तथा संख्या में कमी आने लगी थी।

प्रश्न 4.
गज्जर कौन थे? वे अपनी आजीविका कैसे प्राप्त करते थे?
उत्तर:
गुज्जर-काँगड़ा के गुज्जर शुद्ध चरवाहा कबीले के लोग थे। ये मुख्यतः गाय-भैंस तथा कुछ भेड़-बकरियाँ भी पालते थे। इनकी अनेक शाखाएँ हैं, जैसे-जम्मू-कश्मीर के गुजर-बकरवाल, काँगड़ा के गुज्जर, गढ़वाल और कुमाऊँ के गुज्जर आदि। ये लोग पहाड़ियों में जंगलों के किनारे रहते थे।

गुज्जर लोग अपनी आजीविका दूध, घी और मवेशियों से मिलने वाली दूसरी चीजें बेच कर चलाते थे। घर के मर्द मवेशियों को चराने ले जाते थे और कई बार हफ्तों तक घर नहीं लौटते थे। इस बीच वे जंगल में अपने रेवड़ के साथ ही रहते थे। औरतें सिर पर टोकरियाँ और कंधे पर हाँडियाँ लटका कर रोज बाजार चली जाती थीं। उनकी हाँडियों में दूध, मक्खन और घी आदि होता था। वे सिर्फ इतनी चीजें ही बाजार में ले जा पाती थीं जितनी घर चलाने के लिए काफी हों।

प्रश्न 5.
चरवाहा समाज को किन तीन बातों का विशेष ख्याल रखना पड़ता था? उल्लेख कीजिए।
उत्तर:
चरवाहा समाज को निम्न तीन बातों का विशेष ख्याल रखना पड़ता था-

- उन्हें यह ध्यान रखना पड़ता था कि उनके रेवड़ एक इलाके में कितने दिन तक रह सकते हैं तथा उन्हें कहाँ पानी और चारागाह मिल सकते हैं।
- उन्हें एक इलाके से दूसरे इलाके में जाने का सही समय चुनना पड़ता था तथा साथ ही यह भी देखना होता था कि उन्हें किन इलाकों से गुजरने की छूट मिल पायेगी और किन इलाकों से नहीं?
- उन्हें सफर के दौरान रास्ते में पड़ने वाले गाँवों के किसानों से अच्छे सम्बन्ध बनाने पड़ते थे ताकि उनके मवेशी किसानों के खेतों में चर सकें तथा उन्हें उपजाऊ बना सकें।

प्रश्न 6.
घुमन्तू समुदायों के बार-बार एक जगह से दूसरी जगह आने-जाने से पर्यावरण को क्या लाभ हैं?
उत्तर:
घुमन्तू समुदायों के बार-बार एक जगह से दूसरी जगह आने-जाने से पर्यावरण को निम्नलिखित लाभ हैं-

- इससे एक चरागाह जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल से बच जाता है तथा उनमें दुबारा हरियाली व जिंदगी लौट आती है।
- इससे कृषि भूमि की उर्वरता में भी वृद्धि होती है क्योंकि घुमन्तू समुदाय के मवेशी खेतों में घूम-घूम कर गोबर देते रहते हैं।

प्रश्न 7.
हिमाचल प्रदेश के गद्दी समुदाय की वार्षिक आवाजाही का वर्णन कीजिये।
उत्तर:
हिमाचल प्रदेश के गद्दी समुदाय की वार्षिक आवाजाही का वर्णन निम्न बिन्दुओं में स्पष्ट किया जा सकता-

- गद्दी सर्दी-गर्मी के हिसाब से अपनी जगह बदलते थे। वे सर्दियाँ शिवालिक की श्रृंखलाओं की निचली पहाड़ियों पर बिताते थे तथा झाड़-झंझाड़ वाले शुष्क वनों में अपने पशु चराते थे।
- अप्रैल तक, वे उत्तर की ओर आ जाते थे तथा लाहौल तथा स्पीति में गर्मियाँ बिताते थे। जब बर्फ पिघलती थी और दर्रे साफ हो जाते थे तो अनेक गद्दी अपने पशुओं को चराने के लिए फिर से ऊँचे पहाड़ी क्षेत्रों में पहुँच जाते थे। सितम्बर तक वे अपनी वापसी की यात्रा आरम्भ कर देते थे।
- मार्ग में वे फिर से लाहौल तथा स्पीति के गाँवों में रुकते, गर्मी की फसल काटते तथा सर्दियों की फसल बोकर आगे बढ़ जाते थे।

प्रश्न 8.
धंगर चरवाहा समुदाय की प्रमुख विशेषताएँ लिखिये।
उत्तर:
धंगर चरवाहा समुदाय की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- धंगर महाराष्ट्र का एक प्रमुख चरवाहा समुदाय है।
- यह समुदाय बरसात के समय महाराष्ट्र के मध्य पठारों में रहता है। यहाँ वर्षा बहुत कम होती है।
- 20वीं सदी के प्रारंभ में इस समुदाय की जनसंख्या लगभग 4,67,000 थी।

प्रश्न 9.
महाराष्ट्र के धंगर चरवाहा समुदाय की वार्षिक आवाजाही के प्रमुख बिन्दु बताइये।
उत्तर:
धंगर महाराष्ट्र का एक महत्त्वपूर्ण चरवाहा समुदाय है। इसकी वार्षिक आवाजाही के प्रमुख बिन्दु अग्र प्रकार हैं-

https://www.evidyarthi.in/

- धंगर समुदाय मानसून के समय महाराष्ट्र के अर्ध-शुष्क मध्यवर्ती पठार में रहते थे।
- कम वर्षा के कारण यहाँ केवल शुष्क फसलें ही उगाई जा सकती थीं। मानसून में, यह क्षेत्र धंगर समुदायों के लिए एक विस्तृत चरागाह बन जाते थे।
- अक्टूबर के आसपास धंगर अपनी शुष्क फसलों को काटते थे। इस मौसम में चरागाहों की कमी हो जाती थी इसलिए धंगरों को पश्चिम की ओर जाना पड़ता था।
- करीब महीने भर चलने के बाद वे कोंकण पहुँच जाया करते थे।
- मानसून के आने पर वे कोंकण से वापस चल देते थे।

प्रश्न 10.
कर्नाटक तथा आंध्र प्रदेश के गोल्ला, कुरुमा तथा कुरुबा चरवाहा समुदायों की जीवन शैली की विशेषताएँ बतलाइये।
उत्तर:
कर्नाटक तथा आंध्र प्रदेश के गोल्ला, कुरुमा तथा कुरुबा चरवाहां समुदायों की जीवन शैली की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं-

- गोल्ला समुदाय के लोग गाय-भैंस पालते थे जबकि कुरुमा और कुरुबा समुदाय भेड़-बकरियाँ पालते थे।
- ये लोग जंगलों और छोटे-छोटे खेतों के आसपास रहते थे।
- ये अपने जानवरों की देखभाल के साथ-साथ कई दूसरे काम-धंधे भी करते थे।
- ये लोग बरसात और सूखे मौसम के हिसाब से अपनी जगह बदलते थे।

प्रश्न 11.
राजस्थान में राइका समुदाय पर एक लेख लिखो।
अथवा
राजस्थान के राइका समुदाय के बारे में आप क्या जानते हैं?
अथवा
राजस्थान के राइका समुदाय पर एक टिप्पणी लिखें।
उत्तर:
राइका समुदाय राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में रहता है। राइका खेती के साथ-साथ चरवाही का भी काम करते थे। राइकाओं का एक समुदाय ऊँट तथा दूसरा समुदाय भेड़-बकरियां पालता था। बरसात में तो बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर के राइका अपने पैतृक गाँवों में ही रहते थे क्योंकि इस दौरान उन्हें वहीं चारा मिल जाता था। पर, अक्टूबर आते-आते ये चरागाह सूखने लगते थे। फलतः ये लोग नए चरागाहों की तलाश में दूसरे इलाकों की तरफ निकल जाते थे और अगली बरसात में ही वापस लौटते थे।

प्रश्न 12.
चर्चा कीजिए कि औपनिवेशिक सरकार ने भारत में परती भूमि नियमावली क्यों लागू की?
अथवा
अंग्रेजी सरकार चरागाह की समस्त जमीन को खेती की जमीन में क्यों बदलना चाहती थी?
अथवा
अंग्रेजों ने बेकार भूमि नियम क्यों लागू किये?
उत्तर:
अंग्रेजी सरकार चरागाहों की समस्त जमीन को खेती की जमीन में तब्दील कर देना चाहती थी। इसके निम्न कारण थे-

- जमीन से मिलने वाला लगान उसकी आमदनी का एक बड़ा स्रोत था। खेती का क्षेत्रफल बढ़ाकर सरकार अपनी आय में और बढ़ोतरी करना चाहती थी।
- इसके अलावा इससे जूट (पटसन), कपास, गेहूँ और अन्य खेतिहर चीजों के उत्पादन में भी इजाफा हो जाता, जिनकी इंग्लैंड में बहुत ज्यादा जरूरत रहती थी।
- अंग्रेज अफसर बिना खेती की जमीन, जिससे न तो लगान मिलता था और न ही उपज, को 'बेकार' मानते थे। अतः वे उसे खेती के लायक बनाना चाहते थे।

प्रश्न 13.
चरवाहों ने बदलते नियमों का सामना किस प्रकार किया?
उत्तर:
चरवाहों ने बदलते नियमों का सामना निम्न प्रकार किया-

- कुछ चरवाहों ने तो अपने जानवरों की संख्या ही कम कर दी क्योंकि अब अधिक जानवरों के चराने के लिए पहले की तरह बड़े-बड़े और बहुत सारे चरागाह नहीं बचे थे।
- जब पुराने चरागाहों का इस्तेमाल करना मुश्किल हो गया तो कुछ चरवाहों ने नए-नए चरागाह ढूँढ़ लिए। उदाहरण के लिए 1947 के बाद राइकाओं ने सिंधु नदी के किनार के चरागाहों के स्थान पर हरियाणा के खेतों में अपने . मवेशियों को ले जाना शुरू कर दिया।
- समय गुजरने के साथ कुछ धनी चरवाहे जमीन खरीद कर एक जगह बस कर रहने लगे तथा खेती या व्यापार करने लगे।
- कुछ चरवाहों ने सूदखोरों के चक्कर में अपनी मवेशी खो दी और वे अब खेतों या कस्बों में मजदूरी करने लगे।

प्रश्न 14.
ब्रिटिश अधिकारियों के घुमन्तू लोगों के बारे में क्या विचार थे?
उत्तर:
ब्रिटिश अधिकारियों के घुमन्तू लोगों के बारे में विचार-

- ब्रिटिश अधिकारी घुमंतू किस्म के लोगों को शक की नजर से देखते थे।
- वे गाँव-गाँव जाकर अपनी चीजें बेचने वाले कारीगरों व व्यापारियों और अपने रेवड़ के लिए हर मौसम में अपनी रिहाइश बदल लेने वाले चरवाहों पर यकीन नहीं कर पाते थे।
- ब्रिटिश अधिकारी घुमंतुओं को अपराधी मानते थे अतः 1871 में औपनिवेशिक सरकार ने अपराधी जनजाति अधिनियम (Criminal Tribes Act) पारित किया।

प्रश्न 15.
1871 के अपराधी जनजाति अधिनियम के दो प्रावधान लिखें।
उत्तर:
सन् 1871 में औपनिवेशिक सरकार ने अपराधी जनजाति अधिनियम पारित किया।
अपराधी जनजाति अधिनियम के प्रावधान-

- इस कानून के तहत दस्तकारों, व्यापारियों और चरवाहों के बहुत सारे समुदायों को अपराधी समुदायों की सूची में रख दिया गया। उन्हें कुदरती और जन्मजात अपराधी घोषित कर दिया गया।

https://www.evidyarthi.in/

- इस कानून के अनुसार ऐसे सभी समुदायों को कुछ खास अधिसूचित गाँवों/बस्तियों में बस जाने का हुक्म सुना दिया गया। उनकी बिना परमिट आवाजाही पर रोक लगा दी गई। ग्रामीण पुलिस उन पर सदा नजर रखने लगी।

प्रश्न 16.
अफ्रीका के चरवाहा समुदायों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
उत्तर:
अफ्रीका के चरवाहा समुदायों का संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है-

- अफ्रीका में दुनिया की आधी से ज्यादा चरवाहा आबादी रहती है।
- आज भी अफ्रीका के लगभग सवा दो करोड़ लोग रोजी-रोटी के लिए किसी न किसी तरह की चरवाही गतिविधियों पर ही आश्रित हैं।
- बेदुईन्स, बरबेर्स, मासाई, सोमाली, बोरान और तुर्काना अफ्रीकी चरवाहा समुदाय के जाने-माने समुदाय हैं।
- इनमें से ज्यादातर अब अर्द्ध-शुष्क घास के मैदानों या सूखे रेगिस्तानों में रहते हैं जहाँ वर्षा आधारित खेती करना बहुत मुश्किल है।
- यहाँ के चरवाहे गाय-बैल, ऊँट, बकरी, भेड़ व गधे पालते हैं और दूध, माँस, पशुओं की खाल व ऊन आदि बेचते हैं। कुछ चरवाहे व्यापार तथा परिवहन का काम तथा खेती भी करते हैं।

प्रश्न 17.
अफ्रीका में चरवाहों पर लगाये गये विभिन्न प्रतिबन्धों का वर्णन कीजिये।
अथवा
औपनिवेशिक सरकार द्वारा अफ्रीकी चरवाहों पर क्या प्रतिबंध लगाए गए?
उत्तर:
अफ्रीका में चरवाहों पर निम्न प्रतिबन्ध लगाये गये-

- चरवाहों को एक सीमित एवं विशेष आरक्षित इलाकों में ही रहने को बाध्य किया गया।
- केवल विशेष परमिट लेकर ही चरवाहे जानवरों सहित बाहर जा सकते थे। लेकिन परमिट प्राप्त करना एक कठिन काम था तथा नियमों के उल्लंघन पर कड़ी सजा दी जाती थी।
- चरवाहों को गोरों के इलाकों में पड़ने वाले बाजारों में दाखिल होने पर प्रतिबन्ध लगाया गया। बहत सारे इलाकों में तो वे कई तरह के व्यापार भी नहीं कर सकते थे।

प्रश्न 18.
औपनिवेशिक प्रतिबन्धों के बाद चरवाहों के जीवन पर सूखे का क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर:
प्रतिबन्धों से पहले सूखा पड़ने पर चरवाहे अपने जानवरों को अन्यत्र हरे-भरे इलाके में ले जाते थे। औपनिवेशिक प्रतिबन्धों के बाद वे ऐसा नहीं कर सकते थे। अतः उन पर निम्न प्रभाव पड़े-

- धुमंत चरवाहों की गतिविधियों पर प्रतिबंधों के कारण, वे एक स्थायी क्षेत्र तक ही सीमित रहे। वे बेहतर चरागाहों से वंचित रहे तथा उन्हें उन अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा जो सूखे से प्रभावित रहते थे।

- अब ये लोग संकट के समय भी उन स्थानों तक नहीं जा सकते थे जहाँ चरागाह उपलब्ध थे। इसी कारण सूखे के सालों में चारे की कमी हो गई और भूख तथा बीमारी के कारण बड़ी संख्या में मासाई चरवाहों के मवेशी मर गए।
- जैसे-जैसे चरने की जगहें सिकुड़ती गईं, सूखे के दुष्परिणाम भयानक रूप लेते गए। बार-बार आने वाले बुरे सालों की वजह से चरवाहों के जानवरों की संख्या में लगातार गिरावट आती गई।

प्रश्न 19.
पूर्व-औपनिवेशिक काल में मासाई समाज की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें।
उत्तर:
पूर्व औपनिवेशिक काल में मासाई समाज की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार थीं-

- पूर्व औपनिवेशिक काल में मासाई समाज दो श्रेणियों में विभाजित था-(i) वरिष्ठ जन तथा (ii) योद्धा।
- वरिष्ठ जन शासक वर्ग था, जो समुदाय के कार्यों का निर्णय करता तथा झगड़ों को निपटाने के लिए नियतकालिक सभाओं में मिलता था।
- योद्धा युवा लोग थे, जो मुख्यतः कबीले की सुरक्षा के लिए उत्तरदायी थे। वे समुदाय तथा पशुओं की हमले से रक्षा करते थे और दूसरे कबीलों के मवेशी छीन कर लाते थे।
- चरवाहा समुदाय में हमले का अर्थ था-पशुओं का चुराना या छीन लेना। जहाँ पशु ही सम्पत्ति होते थे, इन हमलों के द्वारा ही विभिन्न चरवाहा वर्गों की शक्ति का अनुमान लगता था।
- युवाओं को योद्धा वर्ग का हिस्सा तभी माना जाता था जब वे दूसरे समूह के मवेशियों को छीन कर तथा युद्ध में बहादुरी का प्रदर्शन कर अपनी मर्दानगी साबित कर देते थे।

प्रश्न 20.
चरवाहे बदलते वक्त के हिसाब से खुद को ढालते हैं। स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
चरवाहे बदलते वक्त के अनुसार स्वयं को ढाल लेते हैं, यह निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट है-

- चरवाहे आवश्यकतानुसार अपनी सालाना आवाजाही का रास्ता बदल लेते हैं।
- आवश्यकतानुसार वे अपने जानवरों की संख्या कम कर लेते हैं।
- नये इलाकों में दाखिल होने के लिए हरसंभव लेन-देन करते हैं।
- राहत, रियायत एवं मदद पाने के लिए सरकार पर राजनीतिक दबाव डालते हैं।
- वे उन इलाकों में अपने अधिकारों को बचाये रखने के लिए अपना संघर्ष जारी रखते हैं जहाँ से उन्हें खदेडने की कोशिश की जाती है।
- वे जंगलों के रख-रखाव तथा प्रबन्धन में अपना हिस्सा माँगते हैं।

प्रश्न 21.
अफ्रीका में गरीब चरवाहों और मुखियाओं के जीवन में क्या भिन्नता थी?
उत्तर:
मुखियाओं का जीवन-

- औपनिवेशिक सरकार द्वारा नियुक्त किए गए मुखियाओं के पास नियमित आमदनी थी जिससे वे जानवर, साजो-सामान और जमीन खरीद सकते थे।
- वे अपने गरीब पड़ोसियों को लगान चुकाने के लिए कर्ज पर पैसा देते थे।

https://www.evidyarthi.in/

- उनमें से ज्यादातर बाद में शहरों में जाकर बस गए और व्यापार करने लगे। उनके बीवी-बच्चे गाँव में ही रहकर जानवरों की देखभाल करते थे। इस तरह उन्हें चरवाही और गैर-चरवाही दोनों तरह की आय होती थी।

गरीब चरवाहों का जीवन-

- जो चरवाहे सिर्फ अपने जानवरों के सहारे जिंदगी बसर करते थे, उनके पास बुरे वक्त का सामना करने के लिए साधन नहीं होते थे।
- यद्ध और अकाल के दौरान उनका सब कछ खत्म हो जाता था, तब उन्हें काम की तलाश में आस-पास के शहरों में शरण लेनी पड़ती थी और कोयला जलाने, सड़क या भवन निर्माण कार्य में मजदूरी करनी पड़ती थी।